* प्रथम अध्याय *

हिंदी और मराठी आँचलिक उपन्यास साहित्य का सामान्य परिचय।

: प्रथम अध्याय :

हिंदी और मराठी आँचलिक उपन्यास साहित्य का सामान्य परिचय

प्रस्तावना :-

आँचलिक उपन्यास हिंदी साहित्य में एक नवीन प्रवृत्ति है। यद्यपि हिंदी उपन्यासों में आँचलिकता के अंकुर पहले से विद्यमान पाये जाते हैं, पर सही अर्थों में आँचलिक उपन्यासों का विकास स्वातंत्र्योत्तर काल से हुआ है। सामान्य उपन्यासों की अपेक्षा आँचलिक उपन्यासों की अपनी अलग विशेषता होती है।

हिंदी में 'ऑचंलिक' शब्द की अपनी सार्थकता है। यह शब्द उन उपन्यासों के लिए प्रयुक्त होता है जिनमें आँचलिक जीवन का समग्रता से चित्रण किया गया हो।

1.1 'अंचल' शब्द की व्युत्पत्ति :-

'अंचल' शब्द मूलत: संस्कृत शब्द 'अञ्चल' है जो पाणिनीय व्याकरण के अनुसार 'अञ्च' धातु में 'अलच' प्रत्यय के योग से निर्मित हुआ है।

कोशों में इस शब्द के कतिपय अर्थ दिये गये हैं।

(1) मानक हिंदी कोश :-

''अंचल = पुं. - (सं. - अञ्च(गति) + अचल)

1) सीमा के आसपास का प्रदेश।

2) किसी क्षेत्र का कोई पार्श्व।

3) किसी चीज के सिरे पर पडनेवाला भाग। सिरा।

4) दे. 'आँचल'।[1]

(2) संक्षिप्त हिंदी शब्द सागर -

अंचल = संज्ञा, पुं. (सं.)

1) साडी का छोर। आँचल। पल्ला। छोर। दे. ''आँचल''।

2) देश का वह भाग या प्रांत जो सीमा के समीप हो।

3) किनारा। तट।[2]

(3) हिंदी शब्द सागर -

अंचल = संज्ञा, पुं. - (सं.)

1) साडी या ओढनी का वह भाग जो सिर अथवा कंधे पर से होता हुआ सामने छाती पर फैला हुआ हो। आँचल। पल्ला। छोर। अँचरा।

2) दुपट्टा। उपरना।

3) किसी प्रदेश या स्थान आदि का एक भाग।

4) किनारा। तट।

5) छोर। किनारा।

6) कोर, जैसे 'नयनांचल' में अंचल

7) तलहटी। घाटी।[3]

(4) प्रामाणिक हिंदी कोश -

अंचल = पुं. (सं.)

1) साडी या चादर का सीरा। पल्ला।

2) सीमा के पास का प्रदेश।

3) किनारा । तट।[4]

(5) आधुनिक हिंदी शब्द -कोश -

अंचल = पुं. (सं.)

1) प्रांत । प्रदेश। क्षेत्र। पार्श्ववर्ती प्रदेश।

2) वस्त्र का छोर। आँचल। पल्लू। सिरा। अंचला।[5]

(6) नालंदा विशाल शब्द सागर -

अंचल = अञ्चल (संज्ञा पुं.) (सं.)

1) आँचल। पल्ला। छोर।

2) प्रांत अथवा देश की सीमा के आसपास का भाग।

3) किनारा। तट। अञ्चल पसारना = नम्रतापूर्वक माँगना।[6]

उपर्युक्त 'अंचल' शब्द की व्युत्पत्तियों में से 'हिंदी शब्द सागर' में दिया हुआ 'किसी प्रदेश या स्थान आदि का एक भाग' यह अर्थ सही माना जा सकता है।

1.2 आँचलिक उपन्यास की परिभाषा :-

आँचलिक उपन्यास की परिभाषा के संबंध में विविध विद्वानों ने अपने मत व्यक्त किये हैं। किसी ने उसमें समाविष्ट तत्वों के आधारपर तो किसी ने अंचल के आधारपर उसे परिभाषित करने का प्रयास किया है।

विद्वानोंद्वारा की गयी परिभाषाएँ निम्न प्रकार हैं।

डॉ. सुमित्रा त्यागी :-

''किसी अंचल विशेष के निवासियों के जीवन दर्शन की अभिव्यक्ति के लिए उस भूमिभाग की संस्कृति, आचार विचार, मान्यताओं, विश्वासों, रीतिरिवाजों, बोली, गीतों, लोककथाओं, किवदन्तिओं एवं लोकजीवन का उद्‌घाटन करनेवाले उपन्यास आँचलिक कहलाते हैं।

डॉ. सुमित्रा त्यागी अपनी परिभाषा में लोकजीवन और संस्कृति द्वारा जीवनदर्शन के चित्रण को महत्त्व देती हैं।

डॉ. ह. क. कडवे :-

''आँचलिक उपन्यास में किसी अंचल विशेष की प्राकृतिक पार्श्वभूमि में उसके समग्र सांस्कृतिक लोकजीवन की गतिशीलता एवं मानवीय चेतना का संवेदनापूर्ण वर्णन स्थानीय बोली के द्वारा यथार्थवादी दृष्टि से किया जाता है।''[8]

डॉ. ह. क. कडवे लोकजीवन की गतिशीलता एवं मानवीय चेतना के संवदेनापूर्ण चित्रण को महत्त्व देते हैं।

शंभुसिंह :-

''आँचलिक उपन्यास का प्रतिपाद्‌य कोई ग्राम, नगर, प्रांत या क्षेत्र विशेष होता है, जिसकी अपनी कुछ विशेषताएँ होती हैं और वह सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक मानदंड की दृष्टि से एक इकाई होता है।''[9]

शंभुसिंह ने ग्राम, नगर अथवा प्रांत के सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक मानदंड को महत्त्व दिया है।

बाबू गुलाबराय :-

''किसी अंचल विशेष की भौगोलिक परिस्थिति वहाँ के जनवर्ग की सभ्यता एवं संस्कृति की विशिष्टता को मुख्य वर्ण्य विषय बनाकर लिखा गया उपन्यास आँचलिक कहलाया।''[10]

बाबू गुलाबराय अंचल की भौगोलिक परिस्थिति, वहाँ के जनवर्ग की सभ्यता एवं संस्कृति को महत्त्वपूर्ण मानते हैं।

डॉ. इंदिरा जोशी :-

''दिन प्रतिदिन उपन्यास अपनी सहज भूमि की ओर लौट रहा है - वह सहज भूमि ही वह सतरंगी नैसर्गिक छटा है जिसका एक नाम हमने 'आँचलिक आभा' रखा है।''[11]

डॉ. इंदिरा जोशी सहज भूमि की नैसर्गिक छटा को महत्त्वपूर्ण मानती है।

उपर्युक्त परिभाषाएँ देखने के उपरांत हम आँचलिक उपन्यास की परिभाषा निम्नप्रकार कर सकते हैं,

''आँचलिक उपन्यास उसे कहा जा सकता है जिसमें किसी विशिष्ट प्रदेश को उपन्यास का कथाक्षेत्र बनाकर उसके द्वारा उस क्षेत्र विशेष का लोकजीवन, लोकसंस्कृति, सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक तथा भौगोलिक परिस्थितियों का यथार्थ एवं मानवीय चेतना का संवेदनापूर्ण चित्रण किया गया हो।''

1.3 हिंदी आँचलिक उपन्यासों का सामान्य परिचय :-

प्रस्तावना :-

हिंदी साहित्य क्षेत्र में उपन्यास एक महत्त्वपूर्ण विधा है उसके अंतर्गत विकसित आँचलिकता एक नवीन प्रवृत्ति के रूप में अग्रगण्य है।

हिंदी साहित्य में आँचलिकता का विकास स्वातंत्र्योत्तर काल से हुआ है। पर इसके पूर्व 'शिवपूजन सहाय' की 'देहाती दुनिया' को आँचलिक उपन्यास परंपरा की प्रथम कृति कहा जाता है। इस उपन्यास में आँचलिकता का कलेवर तैयार करनेवाले लक्षण तो हैं पर उसे पूर्णत: आँचलिक उपन्यास नहीं कहा जा सकता।

यदि आँचलिक उपन्यास के प्रवाह को विविध चरणों में विभाजित किया जाय तो इनके प्रारंभिक चरण में वृंदावनलाल वर्मा के उपन्यास आ जाते हैं। दूसरे चरण में उदयशंकर भट्ट, अमृतलाल नागर,

देवेन्द्र सत्यार्थी के उपन्यास आ जाते हैं। इनके उपन्यासों में आँचलिकता के पर्याप्त दर्शन होते हैं।

पर आँचलिक उपन्यासों के विकास तथा शैली की अधिक प्रखर दृष्टि नागार्जुन तथा रेणु के उपन्यासों से मिलती है।

फणीश्वरनाथ 'रेणु' हिंदी आँचलिक उपन्यास के इतिहास में पूर्ण रूप से प्रथम आँचलिक उपन्यासकार हैं। उनका 'मैला आँचल' उपन्यास पूर्ण रूप से प्रथम आँचलिक उपन्यास है।

1.3.1 वृंदावनलाल वर्मा :-

वैसे तो वृंदावनलाल वर्मा ऐतिहासिक उपन्यासकार हैं पर बुंदेलखंड अंचल के जन जीवन को चित्रित करने के कारण इनका नाम आँचलिक उपन्यासकारों में प्रमुख रूप से लिया जाता है।

'अमरबेल', 'मृगनयनी' तथा 'उदय किरण' आदि कृतियाँ विशेष महत्त्वपूर्ण है।

'अमरबेल' में बांगुर्दन ग्राम में विद्यमान आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, सामाजिक समस्याएँ, जमीदारों की कूटनीतियाँ तथा गाँव में आनेवाले भूमिसुधार संबंधी कार्यक्रमों को प्रस्तुत किया गया है।

'उदयकिरण' में गाँव के युवक युवतियों के माध्यम से आदर्शोन्मुख प्रगतिशील दृष्टिकोण का वर्णन किया है।
'मृगनयनी' में राई ग्राम के प्राकृतिक और उन्मुक्त वातावरण के साथ वहाँ के निवासियों का वर्णन किया है।

1.3.2 देवेन्द्र सत्यार्थी :-

इनके कृतियों में लोकतत्त्व की प्रधानता है। इनके 'ब्रह्मपुत्र' नामक प्रसिद्ध उपन्यास में असम प्रदेश का लोकजीवन प्रस्तुत किया गया है। (पौराणिक जनश्रुतियों के आधार पर)
'दूधगाछ' उपन्यास में आदिवासी संथाल जीवन की झलकियाँ प्रस्तुत की गयी है।

'रथ के पहिये' में आदिवासी गोंड जाति के जीवन को अंकित किया गया है।

'धीरे बहो गंगा' और 'बेला फूले आधी रात' में भी लोकजीवन को ही प्रस्तुत किया गया है।

1.3.3 उदयशंकर भट्ट :-

'सागर लहरें और मनुष्य' लेखक का सर्वश्रेष्ठ आँचलिक उपन्यास है। इसमें औपन्यासिक शिल्प का व्यक्तिवादी प्रस्तुतीकरण कर बरसोवा ग्राम के निवासी मछुआरों का जीवन संघर्ष चित्रित किया है। 'लोक -परलोक' में पद्मपुरी तीर्थस्थान के विद्यमान विडम्बनाओं का चित्रण किया है। इसके साथ 'शेष अशेष', 'दो अध्याय' आदि उपन्यासों का लेखन किया गया है।

1.3.4 रांगेय राघव :-

ऐतिहासिक तत्त्वों को कथानक का आधार बनाने के साथ ही साथ लेखक ने नागरिक एवं ग्रामीण प्रवृत्तियों के विकास में भी योगदान दिया है।

'कब तक पुकारुँ' में भारत की जरायम पेशा जातियों की सामाजिक, नैतिक विशेषताओं, इनमें प्रचुर मात्रा में विद्यमान अंधविश्वास, इस जन जाति की रहन-सहन, खान-पान तथा जीवनप्रणाली का वर्णन किया है।

1.3.5 नागार्जुन :-

सामाजिक यथार्थ को आँचलिकता की पृष्ठभूमि पर चित्रित करने वाले प्रथम आँचलिक उपन्यासकार माने जाते हैं। 'बलचनमा' में बिहार के दरभंगा जिले के निम्न वर्ग की समस्याओं का चित्रण कर उसमें समाजवाद को प्रश्रय दिया है।

'बाबा बटेसरनाथ' शिल्पगत दृष्टि से नूतनता का मौलिक निखार देनेवाले उपन्यास में दरभंगा जिले के रूपउली ग्राम के कृषकों में आनेवाली जागृती का वर्णन किया है। बटवृक्ष द्वारा ग्राम निवासियों को राजनितीक चेतना, जागृति का संदेश दिया गया है। साथ में वहाँ की जीवनशैली को चित्रित किया है। 'वरूण के बेटे' में बिहार के मलाही गोढियारी ग्राम के मछुओं के जीवन एवं क्रिया-कलाप का अंकन किया है। जमींदारी उन्मूलन तथा मछूआरों का वर्णन कर लेखक ने वर्ग संघर्ष का चित्रण किया है।

'दुखमोचन' में पाँच हजार से उपर की आबादीवाले 'हमका कोइली' गाँव के जागरूक संवेदनशील नवयुवक का चित्रण कर गाँव की किसान समस्या, आपसी फूट, वैवाहिक नियमों के संबंध में अंधविश्वासी दृष्टिकोण को

यथार्थवादी ढंगसे उठाया है।

'नयी पौध' में भारतीय ग्रामों में विद्यमान सामाजिक समस्याओं तथा उनके विरोध में चेतना संपन्न नवयुवकों का वर्णन इस कृति में किया गया है।

'इमिरितिया' उपन्यास में जमानिया गाँव के धार्मिक अत्याचारों का अंकन किया गया है। यह प्रथम उपन्यास है जिसमें आधुनिकतम शैली में धूर्त, पाखंडी, चरित्रहीन, क्रूर, भ्रष्टाचारी, चोर एवं तस्कर वर्ग का यथार्थ वर्णन करने में सफलता पाई है।

1.3.6 अमृतलाल नागर :-

आँचलिक प्रवृत्ति को विकसित करने की दृष्टि से इनके दो उपन्यास ही उल्लेखनीय हैं।

'बूँद और समुद्र' में लखनऊ के चौके को कथांचल बनाया है। वहाँ के मध्यवर्गीय नागरिकों के जीवन में विद्यमान गुण दोषों का यथा तथ्य अंकन किया गया है। उसमें ग्रामीण बोली तथा समाज में विद्यमान अंधविश्वासों का चित्रण हुआ है।

'महाकाल' में बंगाल के दुर्भिक्ष को चित्रित किया गया है। अकाल की स्थितियाँ और अमानवीय पैशचिकता का अंकन घोर यथार्थ की भूमि पर किया गया है।

1.3.7 डॉ. प्रतापनारायण टंडन :-

इनके प्रतिनिधि उपन्यासों में विशेष रूप से 'रीता की बात', 'अंधी दृष्टि', 'रूपहले पानी की बूँदे', 'अभिशप्ता', 'वासना के अंकुर', 'पल दो पल', 'कैंसर के मरीज', 'धब्बे', 'फैसला' आदि महत्वपूर्ण उपन्यास हैं।

'वासना के अंकुर' उपन्यास में उन्होंने निम्न मध्यवर्गीय जीवन को आधार बनाया है।

'पल दो पल' में भी लखनऊ नगर के एक सधन अंचल का जीवंत चित्र प्रस्तुत किया है।

1.3.8 शिवप्रसाद मिश्र 'रूद्र' :-

'बहती गंगा' उनका महत्त्वपूर्ण आँचलिक उपन्यास है।

'बहती गंगा' में पिछले दो सौ वर्षों की काशी के सरस जीवन का चित्रण किया है। अपनी आँचलिक भाषा तथा अंचल विशेष के चित्रण के कारण यह रूद्रजी को आँचलिक उपन्यासकार की संज्ञा से विभूषित करती है।

1.3.9 बलवंत सिंह :-

पंजाबी जनजीवन तथा पंजाब के अंचल को बलवंत सिंह ने अपने उपन्यासों में उत्कृष्ट कोटि का निखार दिया है। इनकी प्रमुख आँचलिक कृति 'दो अकालगढ' है जिसमें पंजाब में होनवाले युद्ध और प्रेम के रोमानी ग्राम परिवेश का प्रभावशाली चित्रण किया है।

अन्य आँचलिक उपन्यास हैं 'रात, चोर और चांद', 'काले कोस' एवं 'रावी पार'।

'राका की मंजिल' में अफ्रीका की जाति विशेष का अंचल के आधार पर वर्णन है।

1.3.10 फणीश्वरनाथ 'रेणु' :-

इनके उपन्यासों द्वारा हिंदी साहित्य के क्षेत्र में एक नवीन युग का सूत्रपात्र हुआ। उनकी प्रथम कृति 'मैला आँचल' के प्रकाशन से हिंदी कथा साहित्य में नवीन युग का उद्‌भव हुआ। आँचलिकता की प्रवृत्ति का पूर्ण विकास 'मैला आँचल' से ही देखने को मिलता है। यह उपन्यास व्यक्तिपरक न होकर अंचल परक माना जाता है।

'परती : परिकथा' में पूर्णिया जिले के परानपुर क्षेत्र के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक विशेषताओं का अंकन कर गाँव के एक जमींदार को सर्वप्रथम राजनीति से उपर उठाकर विकास का अग्रदूत बनाया है।

'दीर्घतपा' में ग्रामों को छोड नगर अंचल बाँकीपूर की समाज-सेवी संस्था वीमेन्स वेलफेयर बोर्ड का वर्णन किया है।

'जुलूस' में पूर्णिया जिले के गोडियार गाँव के पास स्वतंत्रता के पश्चात विभाजन के बाद बसी शरणार्थी बस्तियों की समस्याओं और विशेषताओं का स्वाभाविक चित्रण किया है।

1.3.11 भैरवप्रसाद गुप्त :-

इनकी 'गंगा मैया' तथा 'सती मैया का चौरा' विशेष उल्लेखनीय आँचलिक कृतियाँ हैं।

'गंगा मैया' में स्वतंत्रता पूर्व के बालिया जिले के एक गाँव के शोषक एवं शोषित वर्ग के संघर्ष को चित्रित किया है।

'सती मैया का चौरा' में उत्तरप्रदेश के अजयगढ गाँव के सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक समस्याओं का उद्‌घाटन किया है। आँचलिकता की दिशा में महत्त्वपूर्ण स्थान रखनेवाला उपन्यास है।

'धरती, 'जंजीरे', 'नया आदमी' आदि उल्लेखनीय आँचलिक उपन्यास हैं।

1.3.12 बलभद्र ठाकुर :-

इनके 'मुक्तावती' में मणिपुर अंचल में आनेवाली जागरूकता तथा जनवादी चेतना का वर्णन किया है। 'नेपाल की वो बेटी' इस सशक्त उपन्यास में उन्होंने नेपाल की डुटिपाल जाति का संघर्ष और सामंतवादी शासन के शोषण चक्र में आबद्ध यहाँ का जनजीवन चित्रित किया है।

'घने और बने' उपन्यास 'नेपाल की वो बेटी' उपन्यास का दूसरा भाग है जिसमें धने और बने नामक दो (हेमा नामक नारी के) पुत्रों के जीवन संघर्ष को दिखाया है। 'देवताओं के देश में' इस सर्वश्रेष्ठ उपन्यास में कुल्लू अंचल के पर्वतीय सौंदर्य को स्वाभाविक रूप से चित्रित किया गया है।

'लहरों की छाती पर' में स्वातंत्र्योत्तर काल की समस्याएं तथा अंदमान एवं निकोबार देश के जनजीवन का सजीव वर्णन किया है।

'आदित्यनाथ' उपन्यास में कुल्लू, उपत्य की शोभा का वर्णन किया है।

1.3.13 शिवप्रसाद सिंह :-

इनका 'अलग अलग वैतरणी' नामक बृहत् उपन्यास है। उत्तर प्रदेश के वाराणसी क्षेत्र के करैता गाँव से संबंद्ध इस उपन्यास में स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात जमींदारी उन्मूलन के बाद प्रभावित गाँवों का विस्तृत अंकन किया है। इसमें सामाजिक, आर्थिक शोषण, विनिष्ट हो रही नैतिक मान्यताएँ, रूढीवादी संस्कृति के दुष्परिणाम आदि का चित्रण है।

1.3.14 रामदरश मिश्र :-

'पानी के प्राचीर', 'जल टूटता हुआ', 'सुखता हुआ तालाब' आदि मिश्रजी की महत्त्वपूर्ण आँचलिक कृतियाँ हैं।

'पानी के प्राचीर' में मिश्रजी ने राप्ती अंचल की संघर्ष गाथा का विस्तृत अंकन करके स्वतंत्रता के पश्चात भी गावों के निम्नवर्ग के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक स्थिति में कोई भी परिवर्तन नहीं आया है इसका प्रभावी चित्रण किया है।

'जल टूटता हुआ' में गोरखपुर जनपद के कछार अंचल के परिवर्तित जीवन का प्रभावशाली चित्रण किया है।

1.3.15 अमरकांत :-

इनकी 'ग्राम सेविका' कृति महत्त्वपूर्ण है। इसमें विश्णुपुर नामक अंचल के स्वातंत्र्योत्तर ग्रामजीवन के सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक आदि विशेषताओं को यथार्थ के स्तर पर अंकित किया है।

1.3.16 शैलेश मटियानी :-

इन्होंने पर्वतीय अंचलों को अपने उपन्यासों का आधार बनाया है।

'चिठ्ठी रसैन' में पनार नदी के तट पर स्थित 'ऊडलगो' नामक गाँव की समग्ररूपात्मक विशेषताओं और विशेषकर नारी वर्ग की विशेषताओं तथा समस्याओं का चित्रण किया है।

'चौथी मुठ्ठी' में अल्मोडा पर्वतीय अंचल के नारी वर्ग पर होनेवाले अत्याचारों का वर्णन किया है। 'हौलदार' में

अलमोडा अंचल के जनजीवन की समस्त समस्याओं का चित्रण किया है।

'मुख सरोवर के हँस' में कमाउँ प्रदेश की प्रसिद्ध लोककथा 'अजित बफौल' को आधार बनाकर चंपावत के बफौल वंशी-शूरों की गाथाएँ तथा मल्लों के रोमांचक युद्ध को वर्ण विषय बनाया है।

'एक मूठ सरसों' में लोक कथाओं के साथ नारी जीवन की अनेक समस्याओं पर प्रकाश डाला है।

अन्य उपन्यासकार :-

उपर्युक्त प्रमुख उपन्यासकारों के अतिरिक्त स्वातंत्र्योत्तर युग अन्य कुछ उपन्यासकार हैं जिन्होंने आँचलिक प्रवृत्ति का निर्वाह किया है।

उपेंद्रनाथ अश्क के 'पत्थर-अल-पत्थर' में कश्मीर के प्राकृतिक सौंदर्य को समीप स्थित परहेजपुर गाँव के माध्यम से चित्रित किया है।

राजेंद्र अवस्थी की 'तृषित' में आदिवासी क्षेत्रों के जीवन का चित्रण किया है। इसके साथ 'सूरज किरन की छाँव' , 'जंगल के फूल', 'जाने कितनी आँखे' आदि महत्त्वपूर्ण हैं।

राही मासूम रजा के 'आधा गाँव' में गाजीपुर जिले के गंगोली गाँव के मुस्लिम परिवारों की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक जीवन प्रणाली को अंकित किया है।

जयप्रकाश भारती के 'कोहरे में खोये चाँदी के पहाड' में जौनसार-रँवाई क्षेत्र के अविकसितता के कारणों का चित्रण किया है।

शानी कृत 'शाल वनों का द्वीप' में मडिया गोंडो के गोंड बस्तर आदिवासियों के जीवन को चित्रित किया है। इनके 'कस्तूरी' में सडक के किनारे अवस्थित गाँव के सामाजिक कुरीतियों को उठाया है।

जगदीश चंद्र पांडे के 'गगास के तट पर' में कुमायूँ अंचल की रीति नितियों का वर्णन किया है।

आनंद प्रकाश जैन ने 'आठवी भाँवर' में गोसाई जाति की वैवाहिक समस्या का यथार्थ अंकन किया है।

उदयराज सिंह ने 'भूदानी सोनिया' में अंचल विशेष के राजनीतिक पाखंड का रहस्योद्घाटन किया है। 'अंधेरे के विरूद्ध' में बसंतपुर गाँव के परिवर्तित परिवेश का वर्णन किया है।

विश्वंभर नाथ उपाध्याय के 'रीछ' में चांदसी अंचल के चित्रण के साथ राष्ट्र के विकास में बाधक अनेक असामाजिक तत्वों के बावजूद ग्रामीणों की विचारधारा में हो रहे परिवर्तन को बताया है।

केशवप्रसाद मिश्र के 'कोहबर की शर्त' में बलिया अंचल में स्वतंत्रता पूर्व कथा द्वारा नारी की विवशता से परिचित कराया गया है।

हिमांशु जोशी ने 'अरण्य' में कुमायुँ प्रांत में व्याप्त प्राकृतिक सौंदर्य का विस्तारपूर्ण वर्णन किया है।

हर्षनाथ कृत 'करमू और जगनी' और 'रक्त के आँसू' आँचलिकता की कोटी में आते हैं।

लक्ष्मी नारायण कृत 'बया का घोंसला और साँप' में अवध के देहात की यथार्थ करूण और मार्मिक झाँकी उपस्थित की गयी है।

श्री लाल शुक्ल रचित 'राग दरबारी' में शिवपालगंज गाँव की आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, शैक्षिक तथा सांस्कृतिक विशेषताओं को वर्णित किया गया है।

सावित्री देवी कृत 'जागृत ग्राम' में लोक जीवन को आधार बनाकर पूँजीवादी शोषण के अमानवीय रूप का चित्रण किया गया है।

ललित कुमार लिखित 'ऊजली' में राजस्थान और गुजरात प्रदेशों में प्रचलित लोककथा का वर्णन किया गया है।

सुमेरसिंह च्छया के 'भावनाओं के खंडहर' में अंचल विशेष के आधारपर ग्रामीण जीवन में होने वाले परिवर्तनों का अंकन है।

मणि मधुकर के 'सफेद मेमने' राजस्थान के नेगिया गाँव की विशेषताओं का उद्‌घाटन किया गया है।

मायानंद मिश्र के 'माटी के लोग : सोने की नैया' में बिहार के कोसी तटबंध को कथाक्षेत्र बनाया है।

हिमांशु श्रीवास्तव के 'नदी फिर बह चली' में बिहार के छपरा अंचल के परिवर्तित जीवन मूल्यों से संघर्ष कर अंत में आदर्श के प्रति समर्पित होनेवाली एक गरीब लड़की को चित्रित किया गया है।

बलदेव दत्तशर्मा के 'गरीबी से आगे' में स्वातंत्र्योत्तर भारत का विशिष्ट ग्रामांचल की पृष्ठभूमि में चित्रण किया है।

मधुकर गंगाधर ने 'मोतियों वाले हाथ', 'फिर से कहो', 'यही सच है', तथा 'सुबह होने तक' में सर्वथा अछूते अंचलों का चित्रण किया है।

रामकुमार भ्रमर ने 'तीसरा पत्थर' में चंबल घाटी के डाकुओं की समस्याओं का चित्रण किया है।

क्षेमलता बरवलू के 'कश्मीर की धरती में' कश्मीर की सभ्यता एवं संस्कृति का चित्रण किया है।

सच्चिदानंद 'धूमकेतु' ने 'माटी की महक' में बिहार के रामपुर गाँव के वर्ग-संघर्ष एवं राजनीति के प्रभाव को दिखाया है।

मनहर चौहान ने 'हिरना साँवरी' उपन्यास में अंचल को आधार बनाया है।

सर्वदानंद की 'माटी खाई जनावरा' विलास विहारी कृत 'अकाल पुरूष', शिवशंकर शुक्ल कृत 'मोंगरा', योगेंद्रनाथ सिन्हा लिखित 'वन के मन में', दयानाथ झा कृत 'जमींदार का बेटा', राजेंद्र लिखित 'सावन की आँखे', श्याम परमार कृत 'मोरझाल', मुहम्मद इसराइल अंसारी कृत 'गाँव की बेटी' आदि उपन्यासों का उल्लेख भी आँचलिक उपन्यासों की प्रवृत्ति में किया जा सकता है।

इसप्रकार आँचलिक उपन्यासों के प्रारंभिक चरण में वृंदावनलाल वर्मा के उपन्यास आ जाते हैं। दूसरे चरण में उदयशंकर भट्ट, अमृतलाल नागर, देवेन्द्र सत्यार्थी के उपन्यास आ जाते हैं। इनके उपन्यासों में आँचलिकता का पर्याप्त प्रवेश है। आँचलिक उपन्यासों के विकास की स्थिति तथा शैली की अधिक प्रखर दृष्टि नागार्जुन और 'रेणु' के उपन्यासों में मिलती है।

1.4 मराठी आचंलिक उपन्यासों का परिचय :-

द्वितीय महायुद्ध के बाद मराठी साहित्य में अनेक नवप्रवृत्तियों का जन्म हुआ। इन प्रवृत्तियों में आँचलिक प्रवृत्ती का विशेष महत्त्व है।

विश्वव्यापी साहित्य में स्वच्छंदवादी आंदोलन के परिणामस्वरूप आँचलिकता का उदय हुआ। मराठी साहित्य में आयी हुई आँचलिकता उसकी ही विलंबित प्रतिक्रिया है। प्रारंभ में आँचलिकता अनुकरण के रूप में आयी थी पर अब उसने मराठी का सच्चा स्वरूप प्राप्त कर लिया है।

मराठी के आँचलिक उपन्यास साहित्य का वास्तविक आरंभ स्वतंत्रता के बाद ही हुआ है। पर आँचलिक प्रवृत्ति से स्पर्शित पहला मराठी उपन्यास पिराजी पाटील 1899 में लिखित और 1903 में प्रकाशित है 103 पन्नों के क्राऊन आकार के इस छोटे उपन्यास में लेखक धनुर्धारी (रामचंद्र विनायक टिकेकर) ने 19 वे शतक के अंतिम बीस, पच्चीस वर्षों के मराठी अकालग्रस्त ग्रामों का अत्यंत यथार्थ और प्रभावी चित्रण कर तात्कालीन अनेक प्रवृत्तियों तथा समस्याओं का उद्‌घाटन किया है।

इस उपन्यास के बाद 1940 तक अनेक आँचलिक उपन्यास लिखे गये। इनमें 'खेडूत सृष्टीचे कादंबरीकार' इस उपाधि से पुरस्कृत ना. वि. कुलकर्णी का नाम विशेष उल्लेखनीय है।

इनके 'शिपाई', 'पैसा', 'दिवस कसे जातील' इन उपन्यासों में आँचलिकता का प्रदर्शन हुआ है।

इसके साथ बरेरकर, रामतनय (ग. रा. वाळिंबे) दा. न. शिखरे आदि ने गांधीवाद तथा मार्क्सवाद के प्रेरणा से प्रभावित आँचलिक उपन्यास लिखे।

1940 से 1982 तक अनेक आँचलिक उपन्यास लिखे गये।

इनमें 1940 में प्रकाशित र. वा. दिघे का 'पाणकळा' उपन्यास पूर्णत: आँचलिकता का निर्वाह करता है।

इनके अन्य उपन्यास 'सराई' (1943), 'पूर्तता' (1944), 'निसर्गकन्या रानजाई', (1946), गानलुब्धा मृगनयना (1947) 'पड रे पाण्या', 'आई आहे शेतात' आदि हैं।

इन उपन्यासों में प्रकृति के अनेक रूपों का चित्रण उन्होंने किया है। काव्यमय प्रकृति चित्रण इनके उपन्यासों की महत्त्वपूर्ण विशेषता है।

इसके साथ ग. ल. ठोकळ, वि. ल. बर्वे, ना. के. महाजन, वि. द. चिंदुरकर, श. रा. भिसे, श्रीराम अत्तरदे, वि. वा. हडप आदि ने अपनी तरफ से आँचलिकता का निर्वाह किया।

मराठी में श्री. ना. पेंडसे आँचलिक उपन्यास के जन्मदाता माने जाते हैं। पेंडसे से ही आचंलिकता अपनी संपूर्ण विशिष्टता के साथ प्रकट होने लगती है। अक्सर इनकी तुलना प्रसिद्ध आँचलिक उपन्यासकार थॉमस हार्डी के साथ की जाती है। इनके उपन्यासों का अंचल कोकण प्रदेश के विशेष हिस्से रहे हैं।

श्री. ना. पेंडसे के 1947 में प्रकाशित 'एलगार' उपन्यास में 1946 , 47 के हिंदू-मुस्लिम सांप्रदायिक दंगों की देहाती जीवन में हुई प्रतिक्रिया का स्वाभाविक चित्रण दो भिन्न संप्रदायों के दो दोस्तों के आपसी संबंधों द्वारा किया है।

'हद्दपार' में सीधे-सादे एक शिक्षक के भीतर की असमान्यता को स्पष्ट किया है। 'गारंबीचा बापू' में विशाल बापू नामक एक देहाती व्यक्ति का बड़ा सूक्ष्म चित्रण किया है।

इसके साथ 'रथचक्र', 'हत्या' आदि इनके महत्वपूर्ण आँचलिक उपन्यास हैं। 'रथचक्र' तक आते आते इनका ध्यान पात्रों के मनोविश्लेषण पर अधिक केंद्रित होने लगा था।

1.4.1 श्री. व्यंकटेश माडगूलकर :-

मराठी के एक सफल आँचलिक कहानीकार हैं। इनका 'बनगरवाडी' एक ही आँचलिक उपन्यास इनकी कला को अमर करता है। बनगरवाडी इस नामक अकालग्रस्त छोटे से देहात की हृदयद्रावक स्थिति तथा किसानों और अन्य व्यक्तियों का यथार्थ चित्रण इस उपन्यास की विशेषता है। आँचलिकता के सारे लक्षणों के साथ पाठकों को क्षुब्ध करने की जबरदस्त क्षमता इस उपन्यास में है।

1.4.2 गो. नी. दांडेकर :-

अपने उपन्यासों में प्रकृति के नाना रूपों का बडा ही सुंदर चित्रण इन्होंने किया है। 'पडघवली' इनका विशिष्ट आँचलिक उपन्यास है। पडघवली गाँव नष्ट हो रहे देहातों का प्रतिनिधित्व करनेवाला'पडघवली' उपन्यास का अंचल है। आधुनिकता तथा शहरीकरण के कारण देहाती शहरों की तरफ तेजी से भाग रहे हैं और इसी कारण शहरों के आसपास के देहात खाली हो रहे हैं इसका सुंदर चित्रण इस उपन्यास में किया है।

इनके अन्य उपन्यास 'शितू', 'पवनाकाठचा धोंडी' 'माचीवरला बुधा', 'जैत्र-रे-जैत्र', 'मृण्मयी', 'पूर्णामायची लेकरे' आदि हैं।

1.4.3 बा. भ. बोरकर :-

गोवा भूमि से संबंधित इस अत्यंत संवेदनशील लेखक ने गोवा को केंद्र बनाकर 'भावीण' (देवदासी) उपन्यास लिखा है।

गोवा की एक विशेष जाति में देवताओं को अर्पित की हुई अविवाहित स्त्रियों के शोषण तथा उनकी समस्याओं का बडा ही हृदयस्पर्शी चित्रण किया है।

1.4.4 रा. रं. बोराडे :-

आधुनिक काल के सशक्त कहानी और उपन्यासकार के रूप में रा. रं. बोराडे का नाम आता है। मराठवाडा अंचल उनके उपन्यास का क्षेत्र है।

'पाचोळा' इनका बहुचर्चित उपन्यास है। इसमें सामान्य व्यक्तियों के सामान्य जिंदगी की कहानी के साथ मनुष्य जाति के कुछ मूलभूत प्रश्नों की चर्चा अप्रत्यक्ष रूप से की है। विभिन्न पात्रों के तनावपूर्ण संबंध की सहज अभिव्यक्ति यहाँ हुई है।

1.4.5 आनंद यादव :-

इनके 'गोतावळा' इस उपन्यास से आँचलिक साहित्य को एक नई दिशा तथा गति मिली है। आँचलिक साहित्य की परंपरा को तोड यह एक प्रयोगवादी उपन्यास बन जाता है।

नारबा नामक एक अशिक्षित किसान नौकर की मनस्थिति का बडा ही सूक्ष्म चित्रण इसमें किया गया है। भारत के किसी भी प्रदेश के किसी भी किसान नौकर की यह मनस्थिति हो सकती है।

इसी प्रकार 'समरांगण' (1941), 'उघड्या जगात' (1947), 'एका आईची लेकरे' आदि सफल आँचलिक उपन्यास मल्हारी भाऊराव भोसले ने लिखे हैं। इनके उपन्यासों में किसानों की मजबूरी, दरिद्रता का यथार्थ तथा बड़ा भयावह चित्रण हुआ है।

श्री रामतनय ने 'मोहित्यांची मंजुळा', 'खरा उद्धार', 'प्रमिला बाई' आदि उपन्यास लिखे हैं।

चि. त्र्यं. खानोलकर ने अपने उपन्यास 'चानी' में मानव के विकार, क्रौर्य, स्वार्थ आदि का काव्यात्मक चित्रण किया है।

इसके साथ वा. ब. कर्णिक का 'वाडगीण' विभावरी शिकरकर का 'बळी', अण्णाभाऊ साठे का 'वैजयंता', 'फकिरा', रणजीत देसाई का 'बारी', उद्धव शेळके का 'डाळिंबाचे दाणे', 'धग',महादेव मोरे का 'पाव्हणा' तथा द. वि. जोशी का 'जागवेला', 'सरधा', 'येरझार',शंकर पाटील का 'टारफुला', शंकर खंडू पाटील का 'धुंगरु', 'सरपंच व कुलवती', न. धो. महानोर का 'गांधारी' आदि उपन्यासों ने आँचलिकता के प्रवाह को समृद्ध किया है।

मराठी साहित्य में आँचलिकता का प्रारंभ स्वतंत्रता के पूर्व ही हुआ है। आँचलिक प्रवृत्ति से स्पर्शित पहला मराठी उपन्यास धर्नुधारी लिखित 'पिराजी पाटील' है।

पूर्णत: आँचलिकता का निर्वाह करनेवाला उपन्यास र. वा. दिघे का 'पाणकळा' है। मराठी साहित्य में आँचलिक उपन्यास के जन्मदाता माने जाने वाले श्री. ना. पेंडसे से आँचलिकता अपनी संपूर्ण विशिष्टता के साथ प्रकट हुई है।

1.5 आँचलिक उपन्यासों की विशेषताएँ :-

1.5.1 भौगोलिक विशेषता :-

भौगोलिक परिवेश, आँचलिक उपन्यास की महत्त्वपूर्ण विशेषता है। किसी भी आँचलिक उपन्यास में चित्रित विशिष्ट अंचल की भौगोलिक स्थितियाँ वहाँ के समाज जीवन पर गंभीर प्रभाव डालती है जिससे उपन्यास की कथावस्तु को एक अलग विशेषता प्राप्त होती है।

प्रदेश को अंचल बनाने में सबसे महत्त्वपूर्ण हाथ भौगोलिक परिवेश का होता है, क्योंकि वही उसे विशिष्ट व्यक्तित्व प्रदान करता है, जिससे उपन्यास की आँचलिकता वृद्धिंगत होती है।

इस कारण उपन्यासकार भौगोलिकता को तिरस्कृत नहीं कर सकता। भौगोलिकता आँचलिक उपन्यास की अनिवार्यता है।

1.5.2 लोकसंस्कृति का पुनरूत्थान :-

आँचलिक उपन्यास का कथाक्षेत्र एक विशिष्ट अंचल होता है। उस अंचल की लोकसंस्कृति का गहरा प्रभाव वहाँ के समाजजीवन पर होता है। प्रत्येक अंचल की संस्कृति विशिष्ट और अन्य अंचल से भिन्न होती है। आँचलिक संस्कृति के मूलभूत तत्वों में पर्व, त्योहार, मेले, कलाएँ, परंपराएँ, रूढियाँ, अंधश्रद्धाएँ आदि विशेष रूप से निहित होते हैं। इस संस्कृति का प्रभावी चित्रण करना आँचलिक उपन्यास की विशेषता है।

डॉ. हेमें वानेरी ने भारत के सर्व क्षेत्रों में विद्यमान संस्कृति के संबंध में अपने विचार इसप्रकार व्यक्त किये हैं :

''संस्कृति वह सीखा हुआ व्यवहार है, जिसके द्वारा मानव पशुजगत से पृथक होकर सभ्य कहलाता है। संस्कृति का व्यापक अर्थ किसी समाज की जीवन पद्धति से है। जिसमें उसकी कला, शिल्प, विश्वास, मान्यताएँ, मूल्य,

जीवनदर्शन, संस्कार, प्रथाएँ, धर्म आदि सब समाहित है। मानव व्यक्तित्व के निर्माण में संस्कृति ही सहाय्यक होती है।''[12]

इस प्रकार आँचलिक उपन्यासकार के लिए आँचलिक क्षेत्रों में विद्यमान संस्कृति को अपनी कृति में चित्रित करना महत्त्वपूर्ण है। इसके साथ युगानुरूप परिवर्तित सांस्कृतिक विशेषताओं को भी चित्रित करना आँचलिक उपन्यासकारों का ध्येय रहा है।

1.5.3 विशिष्ट भाषा :-

उपन्यास को आँचलिकता प्रदान करने में भाषा तत्व का बड़ा हाथ होता है। कई उपन्यासों में आँचलिक वातावरण तक निर्मित नहीं होता ऐसी स्थिति में भी उन्हें आँचलिक मान लेने का कारण उनमें भाषातत्व का प्राबल्य ही होता है।

आँचलिक उपन्यासों के पात्र आँचलिक भाषा का प्रयोग अधिक व्यापकता से करते हैं जिससे उनके व्यक्तित्व का रंग अधिक गहरा हो जाता है।

हर अंचल की भाषा का रूप अलग होता है। इस भाषा में प्रदेशानुरुप शब्दों के लोक प्रचलित रूप आचंलिक भाषा के शब्द , मुहावरे, लोकोक्तियाँ, विशिष्ट ध्वनियाँ आदि का प्रयोग होता है।

डॉ. रामदरश मिश्र ने भाषा में स्थानीय बोली के प्रयोग को अनिवार्य मानते हुए एक स्थान पर लिखा है :

''एक तो स्थान विशेष का वातावरण चित्रित करने के लिए दूसरे वहाँ के जीवन को जीवंतता और उसकी मूल सहजता के साथ अंकित करने के लिए। भाषा उपर से ओढी हुई चीज नहीं होती वह स्थान विशेष के लोगों के संस्कारों और अनुभूति के साथ अनिचार्य भाव से संपृक्त होती है। अत: कुछ शब्द और मुहावरे इस प्रकार वहाँ के जीवन सत्यों के साथ जुडे होते हैं कि वे सत्यविशेष के साथ स्वयं लगे हुए चले आते हैं। उनका अनुवाद होता है, परंतु अनुवाद भावों, अनुभूतियों या सत्यों की मूल गंध को वहन करने में असमर्थ होता है।''[13]

इस प्रकार अनेक आँचलिक उपन्यासकारों ने अपनी कृतियों में आँचलिक भाषा का प्रयोग करके कृति में सजीवता का समावेश किया है। आँचलिक उपन्यासों में प्रयुक्त भाषा बोलियों, उपबोलियों, हिंदीतर

भाषाओं के शब्दों के प्रयोग से हिंदी का भंडार और शब्दकोष समृद्ध हुआ है और उसकी अभिनव प्रगति हुई है।

1.5.4 सामाजिक जीवन -वातावरण :-

किसी समाज के जनजीवन का विविधरूपात्मक चित्र उपस्थित करना आँचलिक उपन्यासों को प्रमुख विशेषता है।

आँचलिक उपन्यास जिन अंचल-विशेष से संबंधित होते हैं उनकी अपनी सामाजिक समस्याएँ, अपने नैतिक मानदंड और अपनी संस्कृति होती है। इन सबका अत्यंत यथार्थ और कुशल चित्रण सामाजिक वातावरण का प्रभावी रूप उपस्थित करता है।

अंचल विशेषत: पिछडे होने के कारण उस पिछडेपन से समस्याओं का निर्माण होता है। इसीकारण सभी आँचलिक उपन्यासों का सामाजिक जीवन समस्याग्रस्त होता है। हर उपन्यास की सामाजिक समस्याएँ अपने ढंग की होती है।

इस प्रकार आँचलिक उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में जो सामाजिक जीवन चित्रित किया है वह एक ओर रूढीपरक और परंपरानुगामी है तो दूसरी ओर नवचेतना के जागरण के फलस्वरूप सामाजिक विषमताओं से मुक्ति पाने की कोशिश में व्यस्त है।

1.5.5 राजनीतिक जागरण :-

आँचलिक उपन्यासों में राजनीतिक चेतना के स्पष्ट संकेत मिलते हैं। इनमें विभिन्न राजनीतिक विचारधाराओं के प्रसार और प्रभाव का भी अंकन हुआ है। आँचलिक उपन्यासों का उद्‌भव स्वतंत्रता के बाद हो जाने के कारण कतिपय उपन्यासों में स्वतंत्रता संग्राम की लहरों का भी अंकन हुआ है।इन उपन्यासों में ऐसे अनेकसे उपन्यास मिलते हैं,जिनमें गांधीवादी राजनीतिक दर्शन की व्यावहारिक परिणती दिखाई देती हैं।

स्वातंत्र्योत्तर आँचलिक उपन्यासों के इस क्षेत्र में त्रिविध नागरिक और ग्रामीण क्षेत्रों में जागृत होनेवाली चेतना के सशक्त संकेत मिलते हैं।

इसके बारे में महेंद्र चतुर्वेदी का मत है,

''आज के संक्राति काल में यह चेतना स्वभावत: अत्यंत प्रखर है। फलत: इन अनेक तत्वों के सहयोग से गांधी युग के अवसान, राष्ट्रीतया के अंशिक क्षय, प्रांतीय और आँचलिक भावना के उदय तथा लोकतंत्र की स्थापना के कारण उपन्यास में नये प्राण का स्पंदन हुआ और वही स्पंदन आँचलिकता के रूप में प्रस्फुटित हुआ।''[14]

इस प्रकार स्वातंत्र्योत्तर आँचलिक उपन्यासों में विविध अंचलों के क्षेत्र में जाग्रत होनेवाली राजनीतिक चेतना के सशक्त संकेत मिलते हैं।

1.5.6 अर्थ व्यवस्था :-

स्वतंत्रतापूर्व ब्रिटिश शासकों की अन्यायपूर्ण नीति के कारण भारतीय ग्रामिणों की स्थिति दयनीय हो गयी थी। अंग्रेजों ने अपने आर्थिक लाभ के लिए भारतीय आर्थिक व्यवस्था को परिवर्तित कर दिया। अंग्रेजों के इस शोषण का सबसे बड़ा प्रभाव कृषक वर्ग पर पड़ा जो अचंल में रहता था। भारतियों ने अनवरत प्रयत्नों में स्वाधीनता प्राप्त की पर स्वाधीनता प्राप्ति के बाद भी भारतीय ग्रामांचलों में जागरूकता नहीं आयी। ग्रामांचल शोषक वर्ग के अभिषाप से ग्रस्त रहे।

स्वातंत्र्योत्तर उपन्यासों की आँचलिक प्रवृत्ति में शोषक वर्ग के अत्याचारों से त्रस्त जनता का चित्रण हुआ ही साथ में पूँजीवादी, सामंतवादी वर्गों की विषम नीति तथा उनके अत्याचारों से ग्रस्त जनता का चित्रण इन उपन्यासकारों ने अत्यंत सजीवता से किया है।

इस प्रकार आँचलिक उपन्यास में आर्थिक शोषण के विभिन्न रूप का चित्रण करना तथा दूसरी ओर पंचायत व्यवस्था, सहकारी कृषिक्षेत्र तथा समुचित ऋण व्यवस्था तथा शिक्षा प्रणाली आदि के आर्थिक समस्या से मुक्ति पाने के उपायों का चित्रण करना आँचलिक उपन्यासकार के लिए महत्वपूर्ण है।

निष्कर्ष :-

आँचलिक उपन्यास हिंदी साहित्य में एक नवीन प्रवृत्ति है जो स्वातंत्र्योत्तर काल में विकसित हुई है।

जिस उपन्यास में आचंलिक जीवन का समग्रता से चित्रण किया हो उसे आँचलिक उपन्यास कहते हैं।

किसी प्रदेश या स्थान आदि का एक भाग यह अंचल का अर्थपूर्ण तत्व है।

अनेक विद्वानों की अर्थपूर्ण परिभाषाओं का अध्ययन करने के उपरांत हम आँचलिक उपन्यास की परिभाषा इस प्रकार कर सकते हैं,

''आँचलिक उपन्यास उसे कहा जा सकता है, जिसमें किसी विशिष्ट प्रदेश को उपन्यास का कथाक्षेत्र बनाकर उसके द्वारा उस क्षेत्रविशेष का लोकजीवन, लोकसंस्कृति, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक तथा भौगोलिक परिस्थितियों का यथार्थ एवं मानवीय चेतना का संवेदनापूर्ण चित्रण किया गया हो।''

आँचलिक उपन्यास परंपरा की प्रथम कृति के रूप में शिवपूजन सहाय की 'देहाती दुनिया' को लिया जाता है। आँचलिक उपन्यास के प्रारंभिक चरण में वृंदावनलाल वर्मा के उपन्यास आ जाते हैं। दूसरे चरण में उदयशंकर भट्ट, अमृतलाल नागर, देवेंद्र सत्यार्थी के उपन्यास आ जाते हैं जिनमें आँचलिकता के पर्याप्त दर्शन होते हैं। आँचलिक उपन्यासों के विकास की स्थिति तथा शैली अधिक प्रखरता से 'नागार्जुन' तथा 'रेणु' के उपन्यासों से मिलती है। आँचलिक उपन्यास के इतिहास में 'रेणु' पूर्ण रूप से प्रथम आँचलिक उपन्यासकार हैं। उनका 'मैला आँचल' पूर्ण रूप से प्रथम आँचलिक उपन्यास हैं।

मराठी साहित्य में आँचलिकता का प्रारंभ स्वतंत्रता के पूर्व ही हुआ है। आँचलिक प्रवृत्ति से स्पर्शित पहला मराठी उपन्यास 'धर्नुधारी' लिखित 'पिराजी पाटील' है। पर र. वा. दिघे का 'पाणकळा' आँचलिकता का पूर्ण निर्वाह करता है। आँचलिक उपन्यास का जन्मदाता माने जानेवाले श्री. ना. पेंडसे से आँचलिकता अपनी संपूर्ण विशिष्टता के साथ प्रकट हुई है।

आँचलिक उपन्यासों में एक विशिष्ट प्रदेश को कथाक्षेत्र बनाने के कारण इन उपन्यासों की विशेषताएँ सामान्य उपन्यासों की अपेक्षा अलग होती हैं।

भौगोलिक विशेषता आँचलिक उपन्यास की अनिवार्यता है।प्रदेश को अंचल बनाने में सबसे बड़ा हाथ भौगोलिक परिवेश का ही होता है क्योंकि वही उसे विशिष्ट व्यक्तित्व प्रदान करता है।

आँचलिक उपन्यास का कथाक्षेत्र एक विशिष्ट अंचल होता है और हर अंचल की संस्कृति विशिष्ट होती है। उस संस्कृति का गहरा प्रभाव वहाँ के समाजजीवन पर होता है और उस संस्कृति का प्रभावी

चित्रण करना आँचलिक उपन्यास की विशेषता है।

हर अंचल की भाषा का स्वरूप अलग होता है, उस भाषा का प्रभाव वहाँ के स्थानीय बोली पर होता है। इस कारण उपन्यास को आँचलिकता प्रदान करने में भाषा का महत्वपूर्ण हाथ होता है।

इन महत्वपूर्ण विशेषताओं के साथ उपन्यास में चित्रित अंचल के समाजजीवन का विविध रूपात्मक चित्रण प्रस्तुत करना, वहाँ के राजनीतिक वातावरण, अर्थव्यवस्था आदि का चित्रण करना आँचलिक उपन्यासों की विशेषताएँ हैं। तथा इन आँचलिक लेखकों ने आँचलिक जीवन का अत्यंत यथार्थ और संवेदनशील चित्रण अपने साहित्य में किया है।

1925 में शिवपूजन सहाय लिखित 'देहाति दुनिया' हिंदी उपन्यास साहित्य में आँचलिकता का निर्वाह करनेवाली प्रथम कृति है। इसके बाद वृंदावनलाल वर्मा, उदयशंकर भट्ट, अमृतलाल नागर, देवेंद्र सत्यार्थी आदि लेखकों ने आँचलिकता का निर्वाह करने वाले उपन्यास लिखे।

पर 1954 में फणीश्वरनाथ रेणु द्वारा लिखित 'मैला आँचल' सर्वप्रथम पूर्ण आँचलिक उपन्यास है। हिंदी उपन्यास साहित्य में रेणु तथा नागार्जुन इन लेखकों के उपन्यासों से ही आँचलिक उपन्यासों के विकास तथा शैली की अधिक प्रखर दृष्टि प्राप्त होती है। इस प्रकार हिंदी उपन्यास साहित्य में आँचलिक प्रवृत्ति का विकास स्वातंत्र्योत्तर काल में ही हुआ है।

1903 में प्रकाशित तथा रामचंद्र विनायक टिकेकर लिखित 'पिराजी पाटील' मराठी साहित्य में आँचलिकता का निर्वाह करनेवाली प्रथम कृति है।

इसके बाद रामतनय, वरेरकर, ना. वि. कुलकर्णी, दा. न. शिखरे तथा र. वा. दिघे आदि ने अनेक आँचलिक उपन्यास लिखे।

पर आँचलिक उपन्यास के जन्मदाता माने जाने वाले श्री. ना. पेंडसे से ही आँचलिकता अपनी संपूर्ण विशिष्ठता के साथ प्रकट हुई है। 1947 में प्रकाशित 'एलगार' उनका प्रथम आँचलिक उपन्यास है।

इस प्रकार मराठी उपन्यास साहित्य में आँचलिक प्रवृत्ति का विकास स्वातंत्र्योत्तर काल से ही हुआ है।

19 वे शतक के प्रारंभ से ही मराठी तथा हिंदी दोनों उपन्यास साहित्य में आँचलिक प्रवृत्ति प्रवाहित रही है। परंतु उसका सही स्वरूप तथा विकास स्वातंत्र्योत्तर काल से ही हुआ है।

दोनों में अंतर इस बात का है कि मराठी उपन्यास साहित्य में आँचलिकता का प्रांरभ 19 वे शतक के शुरू में हुआ जबकि हिंदी उपन्यास साहित्य में मराठी उपन्यास साहित्य के 22 साल बाद हुआ है।

इसका कारण यह हो सकता है कि महाराष्ट्र के तात्कालिन समाजसुधारकों जैसे जोतिबा फुले, धोंडो केशव कर्वे, आगरकर, कर्मवीर भाऊराव पाटील आदि ने शैक्षणिक प्रसार को अधिक महत्व दिया। इन लोगों ने महाराष्ट्र के देहातों तक शैक्षणिक प्रसार किया। जिसके परिणामस्वरूप महाराष्ट्र के अचंल शैक्षणिक स्तर पर उँचे उठ गये। यहाँ के शिक्षित लोगों ने अपने परिवेश तथा अनुभूतियों को अपने साहित्य लेखन द्वारा अभिव्यक्त करना चाहा। इसी कारण मराठी साहित्य में आँचलिक प्रवृत्ति प्रवाहित होने लगी। और बाद में अंचल से जुडे लेखकों के योगदान से यह प्रवृत्ति अधिक विकसित हो गयी।

परंतु इसके विपरित स्थिति हिंदी क्षेत्र की रही है। वहाँ के देहातों तक शैक्षणिक प्रसार नहीं हो सका इसी कारण शिक्षित लोगों के अभाव में आँचलिक क्षेत्र की अभिव्यक्तिके लिए मराठी साहित्य की तुलना में हिंदी साहित्य को अधिक समय लगा।

: संदर्भ-सूची :

1. रामचंद्र वर्मा - 'मानक हिंदी कोश', पृष्ठ. 9

2. रामचंद्र वर्मा - 'संक्षिप्त हिंदीशब्द सागर', पृष्ठ. 5

3. श्यामसुंदर वर्मा - 'हिंदी शब्द सागर', पृष्ठ. 12, 13

4. रामचंद्र वर्मा - 'प्रमाणिक हिंदी कोश', पृष्ठ. 4

5. डॉ. गोविंद चातक - 'आधुनिक हिंदी शब्द कोश', पृष्ठ. 11

6. श्री. नवलजी - 'नालंदा विशाल शब्द सागर', पृष्ठ. 5

7. डॉ. सुमित्रा त्यागी - 'स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास साहित्य में जीवनदर्शन', पृष्ठ. 226

8. डॉ. ह. क. कडवे - 'हिंदी उपन्यासों में आँचलिकता की प्रवृत्ति', पृष्ठ. 27

9. शंभू सिंह - 'रांगेय राघव और आँचलिक उपन्यास', पृष्ठ. 21

10. बाबू गुलाबराय - 'हिंदी साहित्य का सुबोध इतिहास', पृष्ठ. 164

11. डॉ. इंदिरा जोशी - 'हिंदी आँचलिक उपन्यास उद्‌भव और विकास', पृष्ठ. 11

12. सुभाषिनी शर्मा - 'स्वातंत्र्योत्तर आँचलिक उपन्यास', पृष्ठ. 100

13. सुभाषिनी शर्मा - 'स्वातंत्र्योत्तर आँचलिक उपन्यास', पृष्ठ. 123

14. सुभाषिनी शर्मा - 'स्वातंत्र्योत्तर आँचलिक उपन्यास', पृष्ठ. 56